Library

School of Planning and Architecture, Bhopal

S.No.01 November,2021

पत्रिका	21/11/2021	पेज क्र 11

जन पत्रिका
भोपाल, रविवार, 21 नवंबर, 2021
11

एसपीए का 8वां दीक्षांत समारोह ऑनलाइन आयोजित किया गया, 213 स्टूडेंट्स को मिली डिग्री

छात्रों ने मंदिर और कुंड पर किया रिसर्च, टूरिज्म डेवलपमेंट पर तैयार किया मॉडल

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

भोपाल. योजना एवं वास्तुकला विद्यालय (एसपीए) का 8वां दीक्षांत समारोह ऑनलाइन हुआ। स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएचडी डिग्री एसपीए के डायरेक्टर प्रो. एन श्रीधरन नेडिग्री प्रदान की। 213 को डिग्री मिली। 17 बैचलर ऑफ आर्किटेक्ट, 18 बैचलर ऑफ प्लानिंग, 12 मास्टर ऑफ आर्किटेक्ट (कंर्जवेशन), 15 मास्टर ऑफ आर्किटेक्चर (लैंडस्केप), 17 मास्टर ऑफ आर्किटेक्चर (अरबन डिजाइन), 17 मास्टर ऑफ प्लानिंग, 18 मास्टर ऑफ प्लानिंग (ट्रांसपोर्ट प्लानिंग एंड लॉजिस्टिक मैनेजमेंट), 26 मास्टर ऑफ प्लानिंग, 17 मास्टर ऑफ डिजाइन और 2 पीएचडी उपाधि दी गई। समारोह में 2 उत्कृष्टता पदक, 9 प्रवीणता स्वर्ण पदक और 9 सर्वश्रेष्ठ थीसिस पदक प्रदान किए गए।

गोवर्धन कुंड पर किया शोध

मैं हाथरस का निवासी हूं। मास्टर ऑफ आर्किटेक्टर (कंर्जवेशन) पढ़ाई के दौरान नमामी गंगे और एनआइयूए से रिसर्च ग्रांट मिली थी। गोवर्धन शहर के कुंड पर रिसर्च की। इसे लेकर केंद्र सरकार ने नेशनल कॉम्पीटिशन किया था। जिसमें गंगा बेसिन की वाटर बॉडीज को बचाने के आइडियाज खोजना था। मैं देशभर से 8 रिसर्चर में से एक था। आइआइटी हैदराबाद से पीएचडी कर रहा हूं। इसमें नॉर्थ ईस्ट के हैरिटेज का संरक्षण को लेकर काम करूंगा।

अमन शर्मा, मेडल ऑफ एक्सीलेंस

भोपाल में हैरिटेज सुरक्षित करना जरूरी

मैं जयपुर में हूं। मास्टर ऑफ आर्किटेक्चर (अर्बन) से पढ़ाई के दौरान रानी कमलापति महल पर हुए हैरिटेज वॉक करने वाली टीम में शामिल था। नए और पुराने शहर के अंतर को मिटाने, हैरिटेज को सुरक्षित रखने सुझाव दिए। मैंने पुष्कर टूरिज्म को लेकर रिसर्च की। सुझाव दिया कि शहर में गतिविधियां बढ़ाने की जरूरत है, इससे शहर के मध्य भीड़ को मैनेज किया जा सकेगा। रोजगार के नए साधन बढ़ेंगे।

रिधु धन गेहलोत,
प्रोफिसिएंसी गोल्ड मेडलिस्ट

मराठा टेंपल्स पर रिसर्च की

मैं एर्नाकुलम का रहने वाला हूं। अभी पुणे में एक कॉलेज में अस्सिटेंट प्रोफेसर के पद पर काम कर रहा हूं। मास्टर ऑफ आर्किटेक्चर (कंर्जवेशन) की पढ़ाई के दौरान मराठा टेंपल्स पर रिसर्च की थी। यह सतारा जिले के दो तालुका पर बेस्ड थी। मैंने रिसर्च की थी कि 14वीं से 16वीं शताब्दी के बीच बने इन मंदिरों में कैसे आर्किटेक्चर कल्चरल डेवलप हुआ।

विष्णु के सुरेश,
प्रोफिसिएंसी गोल्ड मेडलिस्ट